

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025

DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

1. The candidate can prepare any 2 (1 speech + 1 Poetry) out of following material to perform in the skill test.
2. Out of the mentioned films list below, the candidate can choose and prepare any one film for discussion.
3. The candidate performs previous work as mentioned above.
4. The candidate may choose and prepare at least any one film to discuss.

For Male candidate

Speech-1

काले सूट वाला:

मैं वास्तव में कौन हूँ? — यह एक ऐसा सवाल है जिसका सामना करना इधर आकर मैंने छोड़ दिया है। जो मैं इस मंच पर हूँ, वह यहाँ से बाहर नहीं हूँ, और जो बाहर हूँ..... खर, इसमें आपकी क्या दिलचस्पी हो सकती है कि मैं यहाँ से बाहर क्या हूँ? शायद अपने बारे में इतना कह देना ही काफी है कि सड़क के फुटपाथ पर चढ़ते आप अचानक जिस आदमी से टकरा जाते हैं, वह आदमी मैं हूँ। आप सिर्फ धूम कर मुझ देख लेते हैं— इसके अलावा मुझसे कोई मतलब नहीं रखते कि मैं कहाँ रहता हूँ, क्या काम करता हूँ, किस से मिलता रहता हूँ, और किन-किन परिस्थितियों में जीता हूँ। आप मतलब नहीं रखते क्योंकि मैं भी आपसे मतलब नहीं रखता, और टकराने के क्षण में आप मेरे लिए वही होते हैं जो मैं आपके लिए होता हूँ। इसलिए जहाँ इस समय मैं खड़ा हूँ, वहाँ मेरी जगह आप भी हो सकते थे। — दो टकराने वाल व्यक्ति होने के नाते आपमें और मुझमें, बहुत बड़ी समानता है। यही समानता आपमें और उसमें, उसमें और उस दूसरे में, उस दूसरे में और मुझमें.....बहरहाल इस गणित की पहेली में कुछ नहीं रखा है। बात इतनी ही है कि विभाजित होकर मैं किसी—न किसी अंश में आप में से हर—एक व्यक्ति हूँ और यही कारण है कि नाटक के बाहर हो या अन्दर, मेरी कोई भी एक निश्चित भूमिका नहीं है।

नाटक: आधे—अधूरे

लेखक: मोहन राकेश

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025
DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

For Male candidate

Speech-2

बिकाश राय: कैप्टन कपूर ने ठीक कहा। बिल्कुल ठीक कहा कि मेरा बड़ा भाई नक्सलवादी था। पुलिस के हाथों मुठभेड़ में मारा गया। वह बहुत बड़े और बहुत सच्चे सपने देखता था। और जो लोग सच्चे सपनों को साकार करने की कोशिश करते हैं, वे कभी भी अपनी मौत नहीं मरते। उनकी मृत्यु हमेशा दूसरों के हाथों होती है। और यह भी सच है कि मेरा बड़ा भाई न्याय की जो लड़ाई बंदूक से लड़ रहा था, वही लड़ाई मैं कानून की ताकत से लड़ रहा हूँ। हमारे वंश में लोगों को न्याय-युद्ध की आदत पड़ चुकी है, सैकड़ों सालों से। शायद कैप्टन कपूर को यह नहीं मालूम कि अगर मेरा बड़ा भाई नक्सलाइट था तो मेरे पिता आजकल कलकत्ता हाईकोर्ट में जज हैं (धीरे से चलता हुआ कैप्टन कपूर के सामने रुकता है) और कैप्टन कपूर! आपने किसी बहुत बड़े राष्ट्रीय रहस्य का उद्घाटन नहीं किया। सेना में भर्ती होने से पहले पुलिसवाले पूछताछ करते हैं, परिवार के बारे में, चरित्र के बारे में। यह बात न सिर्फ पुलिस को पता है, भारत सरकार को भी पता है। (हँसकर) फिर भी मुझे सेना में रख लिया। और आप जैसे अफसर के विरुद्ध केस लड़ने के लिए भेज दिया। शायद इसीलिए आप नाराज हैं मुझसे।

नाटक:—कोर्टमार्शल
लेखक—स्वदेश दीपक

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025
DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

For Male candidate

Speech-3

पिताजी कुछ-कुछ अंधेरे छोटे-से कमरे के फर्श पर खिड़की के नीचे लेटे हुए थे... सफेद वस्त्र पहने और बहुत ही लम्बे-से प्रतीत होते हुए तथा उनके नंगे पैरों की उंगलियां बड़े अटपटे ढंग से फैली हुई थीं। दोनों प्यारे हाथ छाती पर बंधे हुए थे, निश्चल थे। उनकी भी उंगलियां विकृत थीं। सदा हंसती आंखों पर तांबे के सिक्के रखे हुए थे, दयालु मुखड़ा विवर्ण था और दांत दिखाई दे रहे थे, जिनसे मुझे डर लग रहा था।

लाल घाघरा पहने अधनंगी मां उनकी बगल में घुटनों के बल बैठी हुई काली कंधी से उनके लम्बे मुलायम केशों को संवार रही थी। यह वही कंधी थी, जिससे मैं तरबूज के छिलके काटा करता था। उसका गला बैठ गया था। मां भारी और खरखरी आवाज में लगातार कुछ कहती जा रही थीं, उसकी भूरी आंखें सूजी हुई थीं और आंसुओं की मोटी-मोटी बूंदें गिराती हुई मानो पिघली जा रही थी।

लघु उपन्यास: मेरा बचपन

लेखक: मैक्सिम गोर्की

लेखक: धर्मवीर भारती

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025 DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

For Female candidate

Speech-2

आषाढ का एक दिन

मल्लिका:- माँ, सौन्दर्य का ऐसा साक्षात्कार मैंने कभी नहीं किया। जैसे वह सौन्दर्य अस्पृश्य होते हुए भी मांसल हो। मैं उसे छू सकती थी, देख सकती थी, पी सकती थी। तभी मुझे अनुभव हुआ कि वह क्या है जो भावना को कविता का रूप देता है। मैं जीवन में पहली बार समझ पायी कि क्यों कोई पर्वत-शिखर को सहलाती मेघ-मालाओं में खो जाता है, क्यों किसी को अपने तन-मन की अपेक्षा आकाश में बनते-मिटने चित्रों का इतना मोह हो रहता है।क्या बात है माँ? इस तरह चूप क्यों हो? मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध और सब सम्बन्धों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल, अनश्वर है....।

नाटककार: मोहन राकेश

For Female candidate

Speech-3

खामोश! अदालत जारी है

वेणारे : हाँ ! बहुत कुछ कहना है मुझे। (अँगड़ाई लेकर) कितने बरस बीत गए, कुछ कहा ही न ही। क्षण आए, चले गए। एक के बाद एक तूफान आए, मगर कंठ में ही घुटकर रह गए। छाती में प्राणान्तक आक्रोश उठे, किन्तु इर बार ही ठी को कसकर भीच लिया। लगा कि कोई भी इसे जान न ही सकेगा, कोई भी समझ न ही सकेगा इसे। जिस समय शब्दों का प्रचंड ज्वार उमड़ता हुआ आकर ही ठी से टकराने लगता है तो लगता है वह मेरे आसपास रहने वाले आदमी कितने नामसझ, पागल और बचकाने हैं। सभी ! वह भी, जो नितान्त अपना है। दिल करता है उन पर भी जी भर हँसती रहूँ। बस, हँसती ही रहूँ। और तब मन फूट-फूटकर रो उठता है और इतना रोता कि आँतें ऐंठने लगती हैं। लगता कि हृदय फट जाए तो अच्छा हो। जिन्दगी कितनी सारहीन लगती। एक गहरा निःश्वास भरकर मगर प्राण न ही जाते और न जाने पर फिर उसके महत्व का अहसास होता है। आने वाला हर क्षण फिर कितना नया और अनोखा लगता है। आकाश, पक्षी, बादल, किसी सूखे तरु की धीरे से झाँकती हुई कोई टहनी और खिड़की में हिलता हुआ परदा। चारों ओर फैली हुई नीरवता और कहीं दूर से आती हुई अस्पष्ट आवाजें, हॉस्पिटल की दवाओं की भभक यह सब भी तब जिन्दगी की रस से परिपूर्ण लगती हैं।

नाटककार विजय तेंदुलकर

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025
DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

Out of the following candidate may choose any one poem for performance and discussion –

-1-

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है

जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

जो जीवन की आग जला कर आग बना है
फ़ौलादी पंजे फैलाए नाग बना है

जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

केदारनाथ अग्रवाल

SKILL TEST MATERIAL, UG ADMISSION-2025
DEPARTMENT OF ACTING, FFTV, DLCSUPVA

-2-

गीत-फ़रोश

जी हां हुज़र, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ !
जी, माल देखिये दाम बताऊंगा,
बेकाम नहीं हैं काम बताऊंगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,
यह गीत सख्त सर-दर्द भुलाएगा,
यह गीत पिया को पास बुलाएगा !

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको,
पर बाद-बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी, लो॥ ने तो बेच दिये ईमान,
जी, आप न हौ सुनकर ज़्यादा हैरान-
मैं सोच-समझकर आखिर,
अपने गीत बेचता हूँ,

यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
जी, यह मसान में भूख जगाता है,

यह गीत भुवाली की है हवा हुज़र,
यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़र,

जी, और गीत भी हैं दिखलाता हूँ,
जी, सुनना चाहें आप तो गाता हूँ।
जी हां हुज़र, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ !

भवानीप्रसाद मिश्र

-3-

ठाकुर का कुआँ
चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का ।
भूख रोटी की
रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का ।
बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी
फ़सल ठाकुर की ।
कुआँ ठाकुर का
पानी ठाकुर का
खेत-खलिहान ठाकुर के
गली-मुहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या?
गाँव?
शहर?
देश?

ओमप्रकाश वाल्मीकि

